जीवन का स्रोत

ईशा सरदेसाई द्वारा लिखित

मुझे याद आ रहा है कि क़रीब एक साल पहले गुरुमाई जी ने मुझे बताया था कि वे 'logophile' हैं यानी वे शब्द-प्रेमी हैं। उनके ऐसा कहते ही मेरे मुख पर मुस्कान छा गई क्योंकि मेरी श्रीगुरु के शब्द-प्रेमी होने की बात में कुछ ऐसा था जो अचानक ही मुझे बहुत गूढ़ और अत्यन्त मनमोहक लगा। यह मुझे उस सत्य का एक अति स्वाभाविक विस्तार लगा जिसे गुरुमाई जी लम्बे समय से सिखाती आ रही हैं : कि जिन शब्दों का हम प्रयोग करते हैं और जिस तरह हम उनका प्रयोग करते हैं, वह हम पर और हमारे आस-पास के लोगों पर गहरा और दूरगामी प्रभाव छोड़ता है। हम जो हैं, हमारे शब्द उसे प्रतिबिम्बित करते हैं। हम जिस सृष्टि का निर्माण करते हैं, ये उसे आकार देते हैं। शब्दों के कारण युद्ध होते हैं। शब्दों के कारण लोग शान्ति स्थापित करने का प्रयास करते हैं।

वे गुरुमाई जी ही थीं जिन्होंने पहली बार मेरा ध्यान इस ओर आकृष्ट किया कि अंग्रेज़ी शब्द *mother* यानी 'माँ' कितना अद्‌भुत है। अपने पूरे जीवन में इस शब्द का या इसके अन्य स्वरूपों का जैसे कि अंग्रेज़ी के शब्द Mom, मराठी भाषा के शब्द 'आई' का प्रयोग करते समय या बड़े होते-होते, समय के अनुसार मैं और मेरा भाई इसी तरह के जिन भी अन्य शब्दों का प्रयोग कभी-कभी कर लिया करते—मुझे उनमें निहित शक्ति का कुछ एहसास ज़रूर था। यह तो निश्चित है कि इस शब्द का प्रयोग करने की एक अन्तर्जात समझ मुझमें बचपन से ही थी। "Mom," "आई," "माँ," "मम्मा," अपनी माँ का ध्यान अपनी ओर खींचने के निश्चित तरीक़े थे और ये तब और भी ज़्यादा असरदार हो जाते जब मेरी आवाज़ में मिठास और उत्साह भरा होता। बड़े होने पर मैंने गुरुमाई जी से इस शब्द के बारे में और अधिक जाना—उनके प्रवचनों और उनकी कविताओं द्वारा और उस प्रज्ञान द्वारा जो इतने वर्षों में उन्होंने मुझे प्रदान किया है—और इस तरह मुझे यह समझ में आने लगा कि कैसे ये शब्द अपने में अर्थ व महत्त्व के एक सम्पूर्ण जगत को समेटे हुए हैं जिसका अन्वेषण करना अभी मेरे लिए बाकी है।

विशेष तौर पर एक बात जो गुरुमाई जी ने मुझे बताई है, वह यह कि 'माँ' शब्द का उपयोग उसे सम्बोधित करने के लिए किया जाता है जो सर्वश्रेष्ठ है, महानतम है और जो सराहना व उच्च पद के लिए अत्यन्त योग्य है। यह सर्वोत्तम शब्द है और अपने में इस आश्वासन को लिए है कि लोग उसे समझ सकें जिसका वर्णन करने के लिए इसका उपयोग होता है। *पृथ्वी* जो अन्तरिक्ष में विचरता सुन्दर नील ग्रह है या पाँव तले आने वाली सामान्य-सी मिट्टी है, वह *धरती माँ* कहलाती है—यह ज्ञानी व सर्वज्ञ है जो सदा देती है, पालन-पोषण करती है व पुनर्नवीन होती है। *प्रकृति* यानी ऐसा कोई भी स्थान जिसमें पशु-पक्षी व पेड़-पौधे हों, उसे *प्रकृति माँ* कहा जाता है, वह प्रकृति जो व्यापकता व विभिन्नताओं से भरी है, असीमित रूप से करुणामयी है और हमारे केन्द्रण, सम्मान व

संरक्षण की अधिकारी है। जो भी चीज़ हमारी मूल उत्पत्ति या हमारे सृजन की प्रतीक है यानी हम जो हैं और जहाँ से हम आए हैं, उसे दर्शाती है, वह भी इस सम्मानजनक नाम को धारण कर सकती है। *मातृभाषा। मातृभूमि।*

माँ शब्द में निहित अद्‌भुत शक्ति का एक कारण है, उसका अन्तर्जात सम्बन्ध-सूचक होना। कई सारी संज्ञाएँ व गुणवाचक शब्द यानी विशेषण हैं जिनका उपयोग किसी शक्तिशाली, ज्ञानी या पोषण देने वाले व्यक्ति या वस्तु के लिए किया जा सकता है। परन्तु *माँ* को इन सबसे जो अलग बनाता है वह उसकी परिभाषा से स्पष्ट होता है। माँ वह है *जिसमें मातृत्व है।* उसे अपने बच्चों के साथ उसके जुड़ाव से, अपने बच्चों के साथ उसके सम्बन्ध से परिभाषित किया जाता है। किसी व्यक्ति या वस्तु को "माँ" कहकर पुकारते ही हम उसके बच्चे बन जाते हैं। हम यह बताना चाहते हैं कि किसी-न-किसी रूप में हम उसके हैं; कि हम उसके प्रतिबिम्ब हैं और वह है इसीलिए हम हैं; कि वह हमारी पूँजी है और हम उसकी पूँजी हैं और एक मूल स्तर पर हमने उसके साथ एक गहरा सम्बन्ध बनाया है जो अटूट है।

इस नज़रिये से देखें तो यह सही लगता है कि हम इस शब्द का उपयोग केवल उन्हीं के लिए करेंगे जो वास्तव में इसकी अधिकारी हैं—जिन्होंने हमें जीवन दिया है और किसी-न-किसी रूप में हमें पहचान दी है। हम किसे "माँ" कहकर बुलाएँ, इस बारे में भी हम सोच-समझकर निर्णय लेंगे क्योंकि माँ और बच्चे का रिश्ता बहुत पेचीदा और बहुआयामी हो सकता है। ऐसे बहुत कम व्यक्ति या वस्तुएँ हैं जिनके साथ हम स्वेच्छा से ऐसा सम्बन्ध बनाएँगे और जिन पर हम अपेक्षित विश्वास करेंगे। हाल ही में, गुरुमाई जी ने मुझे बताया कि किस तरह उन्होंने यह देखा कि अंग्रेज़ी के शब्द *smother* का उच्चारण *mother* शब्द जैसा है। शब्द-व्युत्पत्ति और अर्थ की दृष्टि से इन दोनों शब्दों का आपस में कोई सम्बन्ध नहीं है, [*smother* का अर्थ है रोकना, दबाना, और *mother* का अर्थ है माँ] और चूँकि अंग्रेज़ी भाषा के *smother* शब्द में *mother* शब्द निहित है और कभी-कभी ये शब्द एक-साथ प्रयुक्त होते हैं, इसलिए इनका और आगे अन्वेषण होना चाहिए। सामान्यतः ऐसी धारणा कि हमें दबाया जा रहा है, कि हमारी माँ ने किसी-न-किसी रूप में हमारी स्वतन्त्रता का हनन किया है, यह नासमझी की ही उपज है। जब तक हम माँ के स्थान पर नहीं होते, तब तक यह जान पाना कठिन ही है कि माँ के कार्य, वे भी जिनसे शायद हम सहमत न हों, वे सब हमारे लिए उसकी फ़िक्र व उसके प्रेम के कारण ही हैं और इसलिए हैं क्योंकि वह हमारी परवाह करती है।

भारत में सर्वोत्तम पद या सर्वोच्च ओहदे के लिए "माँ" शब्द का प्रयोग करने का लम्बा इतिहास है। जैसे कि कई सन्तों ने अपने श्रीगुरु को "माँ" कहकर सम्बोधित किया है। नामदेव महाराज व एकनाथ महाराज जो स्वयं महाराष्ट्र राज्य के गणमान्य सन्त-कवि थे, वे ज्ञानेश्वर महाराज को

'माउली' कहकर पुकारते थे जिसका उपयोग मराठी भाषा में गहन प्रेम को दर्शाने के लिए किया जाता है और इसका अर्थ है "गहरा प्रेम करने वाली माँ।" आज भी, महाराष्ट्र के लोग ज्ञानेश्वर माउली के बारे में बातें करते हैं और मराठी सन्त-कवियों के भक्तों को पण्ढरपुर की वार्षिक यात्रा पर "ज्ञानेश्वर माउली, ज्ञानराज माउली" गाते हुए सुना जा सकता है।

भारत में शास्त्रीय परम्परा के अनुसार भगवान व देवी-देवताओं को पुकारने के लिए भी "माँ" शब्द का या ऐसी भाषा का उपयोग किया जाता है जो मातृत्व के भाव को जगाती हो। ज्ञानेश्वर महाराज ने स्वयं ऐसे अभंगों की रचना की है जिनमें वे भगवान को "आई" कहकर बुलाते हैं। एक भजन में वे गाते हैं, "विठाई किठाई, माझे कृष्णाई कान्हाई" जिसमें भगवान के अलग-अलग नामों के साथ वे "आई" शब्द जोड़ते हैं [यानि विठ्ठल, कृष्ण और कान्हा जो भगवान के नाम हैं, उनके साथ "आई" का उपयोग करते हैं]।

और फिर प्रसंग आता है "गर्भगृह" का, जो भारतीय परम्परा में देवी-देवताओं की आराधना करने के लिए बनाए जाने वाले मन्दिरों की विशेषता है। "गर्भगृह" में निहित शब्द "गर्भ" का मूल शब्द संस्कृत भाषा के शब्द "गर्भाशय" का भी मूल शब्द है। मन्दिरों की वास्तुकला की इस विशिष्टता के अनुसार यह एक गुफा जैसा स्थान होता है जिसमें देवी-देवता विराजमान होते हैं या जहाँ उन्हें प्रतिष्ठापित किया होता है और जहाँ भक्त उनके दर्शन के लिए आते हैं। यहाँ भाषा का उपयोग महत्त्वपूर्ण है क्योंकि ठीक उसी तरह जैसे माँ के गर्भ से नया जीवन उत्पन्न होता है, वैसे ही देवी-देवता भी किसी चीज़ का स्रोत हैं—इस सन्दर्भ में प्रकट जगत का। "गर्भगृह" का समानार्थी शब्द जो पश्चिमी देशों में प्रयुक्त होता है, वह लैटिन भाषा का शब्द है, *sanctum sanctorum* । इससे, मेरी कही हुई बात को और भी पुष्टि मिलती है। *sanctum sanctorum* हीब्रू भाषा के एक वाक्यांश से आया है जिसका भाषान्तर है यहूदी समाज का सबसे पवित्र स्थान यानी "पवित्र स्थानों में भी सबसे पवित्र।"

***

माताओं के प्रति यह सम्मान, जैसा कि इस पद को उन व्यक्तियों के साथ जोड़ना जिनका हमारे जीवन में सबसे अधिक महत्त्व है और हमारे जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव है—विशेष रूप से भारत में—स्त्रीशक्ति का सम्मान करने की एक व्यापक परम्परा से सम्बन्धित है।

सर्वप्रथम इसका परिचय भाषा में मिलता है। भारत की कई भाषाओं में शब्द या तो स्त्रीलिंग होते हैं या पुल्लिंग और यह इस बात पर निर्भर है कि वे क्या हैं। अधिकांशतः रूप से सुन्दर, शक्तिशाली, बलशाली या जिन चीज़ों में सद्गुण समाए होते हैं, उनके लिए उपयोग किए जाने वाले शब्द भाषा-व्याकरण की दृष्टि से स्त्रीलिंग हैं। हिन्दी, उर्दू व संस्कृत भाषा में इसके अन्तर्गत जो शब्द सम्मिलित

हैं, वे हैं आशा, श्रद्धा, भक्ति, क्षमा, करुणा, दृढ़ता, सुन्दरता, रोशनी, हँसी, मुस्कराहट, चाँदनी, शान्ति व खुशी। भारत में कई लोग अपनी प्रिय पुत्रियों के लिए इन नामों का उपयोग करते हैं।

स्त्रीशक्ति को पूजास्थलों में और धार्मिक व आध्यात्मिक कलाकृतियों में सदा ही ऊँचा दर्जा दिया गया है। कई ऐसे मन्दिर हैं जो विशेष रूप से भगवती की आराधना के लिए समर्पित हैं—और इनमें शिल्पकला के गगनचुंबी उत्कृष्ट आश्चर्य शामिल हैं जैसे कि तमिलनाडु राज्य के मदुरई शहर में स्थित मीनाक्षी मन्दिर जहाँ माता पार्वती के एक रूप की उपासना की जाती है; विख्यात तीर्थस्थान जैसे कि बनारस का सुर्ख़ लाल दुर्गा मन्दिर; या महाराष्ट्र में गुरुदेव सिद्धपीठ के निकट वज्रेश्वरी गाँव में स्थित वज्रेश्वरी देवी का मन्दिर।

जो मन्दिर एक पुरुष देवता को समर्पित हो, उसमें हमेशा उनकी सहचरी यानी अर्धांगिनी का मन्दिर भी होता है। किसी-किसी स्थान पर, उनकी अर्धांगिनी उसी मन्दिर में विराजमान होती हैं जिसमें मुख्य देवता प्रतिष्ठित हों, और उनके पास ही खड़ी होती हैं। जहाँ भगवान श्रीविष्णु की पूजा होती है, वहाँ श्रीमहालक्ष्मी की भी पूजा होगी। जहाँ भगवान शिव को आदर-भक्ति के साथ पूजा जाता है, वहाँ देवी पार्वती की भी श्रद्धापूर्वक आराधना की जाती है। भगवान विठ्ठल को सदैव रखुमाई के साथ दर्शाया जाता है। भारत में, ऐसा कहा जाता है कि शक्ति के बिना शिव है ही नहीं; देव अपनी अर्धांगिनी के बिना, अपनी पत्नी के बिना अधूरे हैं। उनकी सहचरी में विद्यमान स्त्रीशक्ति देवताओं द्वारा इस संसार की निरन्तर सृष्टि करने, स्थिति और संहार करने हेतु आवश्यक होती है। इस शक्ति के बिना वे इस कार्य को करने में शक्तिविहीन हो जाते हैं।

इस पर विचार करने पर कि किस प्रकार परम्पराओं में स्त्रीशक्ति का वर्णन किया गया है जैसे कि भारत में, और साथ ही स्त्रीत्व के विषय पर हमारे अपने दृष्टिकोण द्वारा हमें एक समग्र धारणा मिल सकती है कि यह शक्ति ही है जो संसार में चीज़ों को चलाती भी है और साथ ही साथ इस संसार को उन रसों व सौन्दर्य से सम्पन्न करती है जो इस संसार को रहने योग्य बनाते हैं। उदाहरण के लिए, गुरुमाई जी ने मुझे बताया था कि किस प्रकार वे अकसर फूलों और उनकी पंखुड़ियों के घुमाव से मन्त्रमुग्ध रह जाती हैं, और जो इसे इतना मनमोहक बनाता है वह यह है कि यह स्त्रीशक्ति की एक अभिव्यक्ति है।

माँ या वह जिसमें मातृत्व या माँ के गुण हैं, वह कई रूपों में इस शक्ति की प्रतीक होती है, इस शक्ति का उदाहरण होती है। वह अपने बच्चों के लिए शक्ति की तस्वीर होती है। उसका ही सौन्दर्य होता है जिसे बच्चे सबसे पहले जानते हैं, और उसके गुण व रूप जीवनभर के लिए उनकी चेतना में उकेरे रह जाते हैं। [महात्मा गाँधी ने एक बार कहा था, “हो सकता है शुद्ध सोने को और चमकाना सम्भव हो परन्तु कौन अपनी माँ को और सुन्दर बना सकता है?”] अपने उद्देश्यों की निस्वार्थता से जन्मी

शुद्धता के साथ, अपने बच्चों के प्रति उसकी असीम उदारता से जन्मी शुद्धता के साथ वह शुद्ध चरित्र होती है। सुरक्षा, सम्बन्ध, अहेतुक रूप से या बिना किसी शर्त के स्वीकार करना और विश्वास— सभी उसके पर्यायवाची हैं; वह अपने आप में ही, एक घर है।

मैंने गुरुमाई जी से सीखा है कि हमें इस बात के प्रति अपनी जागरूकता को बढ़ाना चाहिए कि किस प्रकार विभिन्न संस्कृतियों के लोग किसी अवधारणा या विचार अथवा राय का वर्णन करते समय किन शब्दों का प्रयोग करते हैं, और ये शब्द किस प्रकार एक-दूसरे से जुड़े होते हैं, किस प्रकार एक-दूसरे से अलग भी होते हैं, उनमें से हरेक शब्द अर्थ की किन बारीकियों को बताता है और किस प्रकार ये सभी अर्थ व संकेत किसी अवधारणा को पूर्ण रूप में समझ पाने में हमारी मदद करते हैं। गुरुमाई जी ने अकसर उन शब्दों पर विशेष ध्यान दिया है जिनका प्रयोग लोग अपनी माँ को सम्बोधित करने के लिए करते हैं। जो महत्त्वपूर्ण बात मैंने पाई है वह यह कि सभी भाषाओं में माँ के लिए प्रयोग किए जाने वाले शब्दों में कितनी समानता है। हिन्दी में लोग कहते हैं "माँ" या "माता।" अंग्रेज़ी में यह है, "Mother," [मदर] "Mom," [मॉम] "Mum." [मम]। स्पेनिश में, "Madre" [माद्रे] या "Mamá" [ममा]। जर्मन भाषा में "Mutter," [मुतृ] "Mama," [ममा] "Mami" [ममी]। इस शब्द का एक वैश्विक पहलू है, जैसा कि भिन्न-भिन्न भाषाओं में दिखाई देता है, जो अप्रत्यक्ष रूप से, एक बच्चे के जीवन में माँ की विश्वव्यापक भूमिका को प्रतिबिम्बित करता प्रतीत होता है। वह चाहे जो भी हो, जहाँ से भी हो, एक माँ, माँ ही होती है, माँ ही होती है।

***

सिद्धयोग पथ पर, हम भी माँ शब्द का प्रयोग उनका वर्णन करने के लिए करते हैं, जो हमारे लिए अतिप्रिय हैं। हाल ही में, मैं स्वामी वासुदेवानन्द से बात कर रही थी। स्वामी वासुदेवानन्द एक सिद्धयोग स्वामी हैं और ध्यान-शिक्षक हैं। वे लगभग ४० वर्षों से श्रीगुरुमाई की सेवा कर रहे हैं और उन्होंने मुझे यह कहानी बताई कि किस तरह गुरुमाई जी को "गुरुमाई" इस नाम से जाना जाने लगा।

सन् १९८३ की शरद ऋतु का समय था और गुरुमाई जी गुरुदेव सिद्धपीठ में थीं। उस समय सभी लोग गुरुमाई जी को "स्वामी चिद्विलासानन्द" या "स्वामी जी" कहकर सम्बोधित करते थे। स्वामी वासुदेवानन्द, जो गुरुमाई जी के साथ होने वाले सत्संगों में अकसर सूत्रधार या वक्ता होते थे, उन्हें लगातार यह असहज लगता रहता कि श्रीगुरु को उसी तरह सम्बोधित किया जाए जिस तरह वे एक स्वामी जी को करेंगे, इसके साथ-साथ लोगों को सुनने में भी यह अच्छा नहीं लगता था। अतः, कुछ और अन्य लोगों के साथ स्वामी वासुदेवानन्द कुछ अन्य नामों की सम्भावनाओं के बारे में विचार करने लगे जिन्हें गुरुमाई जी को बताया जा सके और जिससे उनका नाम विशिष्ट हो व उसका उचित महत्त्व परिलक्षित हो सके। वे ऐसा नाम ढूँढ़ रहे थे जो छोटा भी हो और उच्चारण करने में व याद

रखने में आसान हो। आख़िरकार, वे भक्त थे, अनन्य भक्त जो अकसर श्रीगुरु से प्रार्थना करते थे; नाम जितना छोटा होगा, उनकी प्रार्थनाओं का फल भी उतनी ही शीघ्रता से मिलेगा। ☺

एक बार दोपहर में स्वामी वासुदेवानन्द एक सत्संग-हॉल में संगीत के एक अभ्यास-सत्र में भाग ले रहे थे। उस दिन, कुछ सह-संगीतकारों के साथ वे महाराष्ट्र के सन्त-कवि तुकड्यादास द्वारा रचित एक अभंग सीख रहे थे। एक साधक के रूप में बाबा जी भारत की अपनी यात्राओं के दौरान सन्त-कवि तुकड्यादास जी से मिले थे। अभंग था, 'आवडली गुरुमाई।'

मराठी भाषा में [और साथ ही भारत की अन्य भाषाओं में जैसे, हिन्दी में] "गुरुमाई" का अर्थ है "गुरु-माता।" यह शब्द एक अन्य शब्द के साथ भी निकटता से जुड़ा हुआ है जिसका अर्थ है, "वे जो गुरुतत्त्व का मूर्तरूप हैं।"

जैसे ही स्वामी वासुदेवानन्द ने चैन्टिंग शीट में से इस शब्द को और उसके अर्थ को पढ़ा वैसे ही सत्संग-हॉल का दरवाज़ा खुला। वहाँ गुरुमाई जी थीं! उन्होंने एक क्षण के लिए अभ्यास-सत्र को देखा और फिर दरवाज़ा बन्द करने से पहले मुस्कराकर स्वामी जी को देखा।

अगली सुबह, गुरुमाई जी गुरुचौक में बैठी थीं, और स्वामी वासुदेवानन्द उनके दर्शन के लिए आगे आए। अपने हाथों में वे उन नामों की सूची लिए हुए थे जिन्हें वे गुरुमाई जी को सुझाव हेतु बताने वाले थे।

प्रणाम करने के बाद स्वामी वासुदेवानन्द गुरुमाई जी के थोड़ा और निकट आए। वहाँ कई लोग पास ही में बैठे थे, कई लोग दर्शन के लिए आ रहे थे, और स्वामी जी नहीं चाहते थे कि कोई भी सुन ले। बहुत धीरे-से और विनम्रता से स्वामी वासुदेवानन्द ने कहा, "मैं आपको कुछ बताना चाहता हूँ और वह यह कि हम आपको स्वामी जी कहकर सम्बोधित करते नहीं रह सकते।"

गुरुमाई जी ने स्वामी वासुदेवानन्द को कौतूहल से देखा।

"क्यों?" उन्होंने स्वामी जी से पूछा।

स्वामी वासुदेवानन्द ने कहा, "मैं आपको कुछ नाम बताना चाहता हूँ जो आपको सम्बोधित करने के लिए उचित रहेंगे।"

"कहिए," गुरुमाई जी ने कहा।

स्वामी वासुदेवानन्द ने काग़ज़ की ओर देखा जिसमें वे नाम लिखकर लाए थे। वे रुके। किसी कारणवश, वे उन सभी विकल्पों को पढ़ ही नहीं पाए जो सूची में थे; वे उन्हें कह ही नहीं पाए। वे जो कुछ बोल पाए बस यही कि, "कृपया, क्या हम आपको गुरुमाई जी कह सकते हैं?"

स्वामी चिद्विलासानन्द ने अपनी आँखें बन्द कीं। धीरे-धीरे वे झूमने लगीं। कुछ क्षणों बाद उन्होंने मुड़कर स्वामी वासुदेवानन्द की ओर देखा। उनके मुख के भाव बड़े कोमल थे, उनके नेत्रों की गहराई अगाध थी। कोमलता से वे बोलीं : "हाँ। आप मुझे गुरुमाई बुला सकते हैं। सबको यह बता दें।"

उसके बाद कुछ ही समय में गुरुमाई जी गुरुचौक से चली गईं। जब भीड़ छँटी, स्वामी वासुदेवानन्द गुरुमाई जी द्वारा दिए गए दिशा-निर्देश पर कार्य करने हेतु चल पड़े। पहले व्यक्ति जिनसे उन्होंने बात की वे थे दादा यन्दे, जो लम्बे समय तक, सिद्धयोग गुरुओं के भक्त थे और कई दशकों तक उन्होंने गुरुदेव सिद्धपीठ में रहकर सेवा की। जैसे ही दादा यन्दे ने नाम सुना, वे गुरुचौक में ही गाने व नाचने लगे : "गुरुमाई! गुरुमाई! गुरुमाई!"

और जैसे-जैसे लोगों ने उत्सुकता के साथ अपने लैन्डलाइन फ़ोन उठाए, और जिन-जिन भी सिद्धयोग भक्तों को वे जानते थे, उन्हें फोन करके बताया, यह बात सब तक पहुँचते समय न लगा। नित्य विकसित, विस्तृत हो रहे प्रकाश-पुंज की तरह, घर-घर को, नगर-नगर को, शहर-शहर को दीप्तिमान करते हुए यह नाम पूरे विश्व में फैल गया।

तब से, स्वामी चिद्विलासानन्द को गुरुमाई कहा जाने लगा।

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।